पाठ-11 भारत की भाषिक एकता

एक सुंदर-सी फुलवारी में जब भिन्न-भिन्न प्रकार के अनेक फूल खिले हुए होते हैं तब देखने वालों को बहुत खुशी मिलती है। हमारे देश में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। भाषाओं की इस फुलवारी में खिले फूल के समान हर एक भाषा का अपना-अपना अनोखा रूप, रंग और सुगंध है। जैसे हर एक फूल फुलवारी की सुंदरता में चार चाँद लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ता है, वैसे ही भारत की बहुभाषिक संस्कृति को इनकी हर एक भाषा से परिपुष्टि मिलती है। विभिन्न भाषाओं की विभिन्न लोककथाएँ, लोकगीत, मुहावरे, कहावतें, विविध विधा की साहित्यिक रचनाएँ आदि मिलकर ही भारत की सामासिक संस्कृति को विशिष्ट बनाती हैं।

भाषाओं की फुलवारी

विविधता में एकता भारतवर्ष की एक प्रमुख विशेषता है। भाषा के क्षेत्र में भी यही विविधता परिलक्षित होती है। भारत में बोली जानेवाली डेढ़ हजार से भी अधिक भाषाओं में से 22 भाषाओं को भारतीय संविधान ने अष्टम अनुसूची में स्वीकृति दी है। हिंदी, असमीया, बोड़ो, बांग्ला, उड़िया आदि ऐसी ही संविधान स्वीकृत कुछ भाषाएँ हैं। परंतु ऐसी अनेक भाषाएँ हैं जो अब तक संविधान में सन्निविष्ट नहीं हुई हैं। इनमें से कुछ भाषाएँ राज्यों की राजभाषाओं के रूप में भी स्वीकृत हैं। उदाहरण के लिए मिजो, खासी, गारो आदि के नाम लिए जा सकते हैं। ये जो अलग-अलग भाषाओं के बोलने वाले लोग हमारे देश

में रहते हैं, क्या उन्हें एक-दूसरे को समझने-समझाने में मुश्किल नहीं होती ? हाँ, मुश्किलें तो होती हैं जरूर। पर इन भाषाओं में कुछ ऐसे तत्व समाहित हैं जिनके कारण एक भाषा बोलने वाले लोग दूसरी भाषा बोलने वाले लोगों की बातें कुछ-न-कुछ तो समझ ही लेते हैं; उनकी भाषा भी कुछ-कुछ जानी-पहचानी-सी लगती है। इन तत्वों ने ही भारतीय भाषाओं को एकता के सूत्र में बाँध रखा है।

रामायण, महाभारत की कथाएँ तो तुमलोग जानते ही होगे न ? आज से हजारों वर्ष पहले संस्कृत भाषा में ये महाकाव्य लिखे गए थे। संस्कृत भाषा में ही विश्व के सबसे प्राचीन ग्रंथ वेद की रचना हुई। उसके बाद इसी भाषा में उपनिषद, पुराण आदि अनेक ग्रंथों की रचना हुई। पंचतंत्र, हितोपदेश की अमर कथाएँ, कालिदास, भवभूति आदि के विश्व विख्यात काव्य, नाटक आदि इसी भाषा में रचे गए। कालक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में फैल जाने के पश्चात संस्कृत भाषा कुछ-कुछ परिवर्तित होने लगी और इसके फलस्वरूप कालांतर में कई आधुनिक भारतीय भाषाएँ, जैसे- हिंदी, असमीया, बांग्ला, उड़िया, मराठी आदि उत्पन्न हुईं। तो कहा जा सकता है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति मूलत: संस्कृत भाषा से ही हुई है। इसलिए संस्कृत भाषा के अनेक शब्द और व्याकरण के अनेक नियम आधुनिक भारतीय भाषाओं में भी प्राप्त होते हैं। इस रूप में भारतीय भाषाओं में एकता की झलक परिलक्षित होती है।

विश्व के प्राचीन ग्रंथ वेद में विमान की संकल्पना

संस्कृत में रचित वाल्मीकि रामायण के आधार पर प्रान्तीय भाषाओं में भी रामायण लिखे गए। कंबन ने तमिल भाषा में रामायण का अनुवाद किया तो माधव कन्दलि ने असमीया भाषा में और तुलसीदास ने अवधी में 'रामचरितमानस' लिखा। श्रीमद्भागवत और महाभारत में वर्णित कथाओं के आधार पर प्रान्तीय भाषाओं में अनेक ग्रंथ लिखे गए। असम के महापुरुष शंकरदेव और उनके शिष्य माधवदेव की रचनाएँ भी संस्कृत के ग्रंथों पर ही आधारित हैं। पंचतंत्र तथा हितोपदेश की अमर कथाओं का अनुवाद प्राय: सभी भारतीय भाषाओं में प्राप्त होता है। इसके फलस्वरूप स्थानीय भाषाओं के साहित्य में वर्ण्य विषय का साम्य परिलक्षित होता है। आधुनिक भारतीय भाषाओं में संस्कृत के अनेक शब्द, कुछ ज्यों-के-त्यों और कुछ थोड़ा बदलकर प्रयोग किए जाते हैं। इस प्रकार के शब्दों को क्रमश: 'तत्सम' और 'तद्भव' शब्द कहते हैं। इन तत्सम और तद्भव शब्दों के कारण अनेक भाषाओं के शब्दभण्डार में समान रूप के शब्द भरे पड़े हैं। यह भाषिक एकता का एक प्रमुख तत्व है।

प्राचीन काल में भी हमारे देश में विभिन्न जातियों के लोगों का निवास था और उनकी अपनी-अपनी भाषाएँ थीं। इन भाषाओं में द्रविड़, ऑस्ट्रिक, मंगोलीय, तिब्बत-बर्मी आदि अनेक मूलों की भाषाएँ

हैं। तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम आदि दक्षिण भारत की भाषाएँ द्रविड़ मूल की हैं। पूर्वोत्तर भारत में प्रचलित बोड़ो, कारबि, मिसिंग, मिरि, तिवा, देउरी, टाइ, खासी, गारो, मणिपुरी, मिजो, चकमा, आओ, अंगामी, आदि, आबर इत्यादि भाषाएँ ऑस्ट्रिक, मंगोलीय, तिब्बत-बर्मी आदि अलग-अलग मूलों की भाषाएँ हैं। इन भाषाओं में भी एकता के तत्व परिलक्षित होते हैं।

पूर्वोत्तर में अधिक संख्यक लोगों की बोलचाल की भाषा है असमीया। अत: यहाँ के जनजातीय लोगों के समाज में पारस्परिक संवाद असमीया भाषा के जरिए ही होता है। उदाहरण के लिए नागालैंड में अनेक जनजातीय लोगों का निवास है और उनकी भाषाएँ भी अलग-अलग हैं। आपसी संपर्क की सुविधा के लिए नागा लोग नागा जनजातीय भाषाओं के तत्व तथा असमीया के मिश्रण से बनी 'नागामीज' भाषा का व्यवहार करते हैं। इसी प्रकार अरुणाचल प्रदेश के लोग भी विभिन्न जनजातीय समुदायों में पारस्परिक संपर्क तथा आदान-प्रदान के लिए 'नेफामीज' तथा हिन्दी का व्यवहार करते हैं। इस प्रकार के भाषा-व्यवहार के कारण भाषाओं में एकता के तत्व समाहित हो जाते हैं।

भारतवर्ष में जब मुसलमान लोगों का आगमन हुआ तब उनके साथ अरबी और फारसी भाषाएँ भी आ गईं। इन भाषाओं के प्रभाव के कारण आधुनिक भारतीय भाषाओं में किताब, कलम, कागज, चश्मा, दुनिया आदि हमेशा व्यवहार में आनेवाले अनेक शब्दों का प्रचलन होने लगा। मुसलमानों के बाद भारत में अंग्रेज, फ्रांसीसी, डच, पुर्तगाली आदि अनेक यूरोपीय जातियों के लोग आए और उन्होंने उपनिवेश बना लिए। इनके सान्निध्य के कारण हमारी भाषाओं में इनकी भाषाओं के अनेक शब्द आ गए और धड़ल्ले से प्रयोग भी होने लगे। हमारी भाषाओं में प्रयुक्त स्कूल, अलमारी, स्टेशन, साइकिल, आदि यूरोपीय भाषाओं से आगत शब्द हैं। इन विदेशी भाषाओं से आगत शब्दों के कारण आधुनिक भारतीय भाषाओं में एक प्रकार का संपर्क सूत्र बन चुका है।

अंग्रेजी शासन से स्वतंत्र होने के पश्चात भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकृति दी। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान जनता ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा की भी मर्यादा दी थी और यह भाषा राष्ट्रीय अस्मिता की प्रतीक बन गयी थी। देश के हिन्दीतर भाषी राज्यों में हिन्दी प्रचार-प्रसार की लहर फैल गई थी। हिन्दी हिन्दीतर भाषी राज्यों के बीच संपर्क भाषा के रूप में भी व्यवहृत होने लगी थी। इधर जनसंचार माध्यमों में हिन्दी अपने लिए एक महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ, फिल्म, टी.वी. सीरीयल, विज्ञापन आदि में हिन्दी का प्रयोग होने लगा है और ये देशभर में संप्रसारित भी होते हैं। अत: विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषाओं में हिन्दी के प्रभाव के कारण कई समान तत्व आ गए।

साहित्यिक अनुवाद के जरिए किसी एक भाषा के बोलने वाले लोगों को अन्य भाषाओं के उत्कृष्ट और विशिष्ट रचनाओं का स्वाद प्राप्त होता है। इसके अलावा भाषिक समृद्धि में भी साहित्यिक अनुवाद का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। हिन्दी के प्रयोग-क्षेत्र में विस्तार तथा स्थानीय भाषाओं में विभिन्न विषयों की

Copyright- SCERT, Assam
not to be republished

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण-कार्य को अनुवाद से काफी सहायता मिली। विभिन्न भाषाओं के पारस्परिक सहयोग से काफी शब्दों का विकास और निर्माण हुआ। कुछ क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली का भी प्रयोग स्वीकृत हुआ। इन सभी कारणों से आधुनिक भारतीय भाषाओं में पारस्परिक संपर्क बढ़ने लगा है। भाषाओं में सामान्य तत्वों की वृद्धि हुई है। भाषिक एकता के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है।

'साँचिपात' में लिखे ग्रंथ

भारत की विभिन्न भाषाओं की लिपियाँ भी भिन्न-भिन्न हैं। उदाहरणार्थ- हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है, पंजाबी की गुरुमुखी। इसी प्रकार असमीया, ओड़िया, तमिल, तेलुगु आदि भाषाओं की लिपियाँ अलग-अलग है। परन्तु जिस तरह अनेक आधुनिक भारतीय भाषाएँ संस्कृत से उत्पन्न हैं उसी प्रकार अनेक आधुनिक भारतीय लिपियाँ प्राचीन भारत में प्रचलित ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न हैं। गौर से देखने पर विभिन्न लिपियों में कुछ-न-कुछ समता दिखाई पड़ती ही है। कई भाषाओं की अपनी लिपि न होने के कारण बाद में लिखने के लिए सुविधानुसार देवनागरी या रोमन लिपि ग्रहण कर ली गई है। इस प्रकार लिपि भी एक तरह से भाषिक एकता का निर्वाह करती है।

भारतीय समाज की बहुभाषिकता जिस प्रकार कुछ समस्याओं का कारण बनती है उस प्रकार भाषाओं के विकास में सहायक भी सिद्ध होती है। पिछड़ी हुई भाषाओं के विकास के लिए उन भाषाओं के क्षेत्र के आस-पास व्यवहार होनेवाली विकसित भाषाओं से सहायता ली जाती है। भाषा के विकास के लिए हमारे मन में अपनी-अपनी भाषाओं के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव होना अति आवश्यक है। अगर हम अपनी भाषा को सम्मान नहीं देंगे, उसका व्यवहार करना शर्म की बात समझेंगे तो उसका विकास नहीं हो पाएगा और एक समय ऐसा आएगा जब वह भाषा मृत भाषा कहलाएगी। हमारे देश में अब अनेक भाषाएँ संकटग्रस्त भाषाओं की तालिका में सन्निविष्ट हैं। हमें अपनी भाषा को ऐसा होने से रोकना है। अपनी भाषा की तरह ही अन्य भाषाओं के प्रति भी श्रद्धा और सम्मान का भाव रखना चाहिए। हम जितनी अधिक भाषाएँ सीखेंगे उतनी अधिक अपनी भाषा का विकास करने का सामर्थ्य प्राप्त करेंगे। भाषाओं के बीच आदान-प्रदान जितना बढ़ेगा उतना ही ज्ञान का प्रसार-प्रचार होगा और भाषाओं की श्रीवृद्धि होगी। विभिन्न भाषाओं के बीच पारस्परिक सम्पर्क में ही भाषिक एकता भी समाहित होती है।

एक प्राचीन ग्रंथ के कुछ पन्ने

आओ, जानें :

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में स्वीकृत 22 भाषाओं के नाम : असमीया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, डोगरी, तमिल, तेलुगु, नेपाली, पंजाबी, बोड़ो, बांग्ला, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, मैथिली, संथाली, संस्कृत, सिन्धी, हिन्दी।

© NCERT not to be republished

अभ्यास-माला

पाठ से :

1. पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के जवाब दो :

(क) संसार का सबसे पहला ग्रंथ कौन-सा है ?

(ख) कालिदास ने किस भाषा में रचना की थी ?

(ग) आर्य मूल की भाषाओं और अनार्य मूल की भाषाओं के दो-दो उदाहरण प्रस्तुत करो।

(घ) किन तत्वों के कारण भारतीय भाषाओं में एकता का भाव परिलक्षित होता है उल्लेख करो।

(ङ) हिंदी भाषा की लिपि को क्या कहते हैं ? इस लिपि का विकास किस प्राचीन लिपि से माना जाता है ?

(च) पाठ में कुछ तत्सम शब्दों का उल्लेख हुआ है, जैसे - स्वर्ग, देवता, शत, पुष्प, प्रिय, चतुर्थ, मध्य, वचन, नव आदि। इस प्रकार के कुछ और शब्द खोजकर एक तालिका बनाओ।

(छ) हिंदी में अनेक विदेशी भाषाओं के शब्द प्रयुक्त होने लगे हैं। हिंदी में सामान्यत: व्यवहार होते रहने वाले कुछ अंग्रेजी और कुछ अरबी-फारसी शब्दों के उदाहरण दो।

(ज) आधुनिक भारतीय भाषाओं में सबसे पहले किस भाषा में रामायण का अनुवाद हुआ था ? बाद में किन-किन भाषाओं में रामायण का अनुवाद हुआ और उनके अनुवादक कौन-कौन थे ? पता करो और लिखो।

(झ) आधुनिक भारतीय भाषाओं में पारस्परिक अनुवाद होते रहे। कुछ अनूदित ग्रंथों के नाम लिखो और किस भाषा से किस भाषा में अनुवाद किया गया है इसका भी उल्लेख करो।

(ञ) आओ, इन तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखें :

पिता, माता, भाई, घर, हाथ, पाँव, मोर।

पाठ के आस-पास :

1. हमारे देश में प्रचलित विभिन्न भाषाओं की अपनी-अपनी लोककथाएँ और लोकगीत हैं। विविध भाषाओं की जितनी लोककथाओं और जितने लोकगीतों का संग्रह कर सकते हो करो और मंडली में बैठकर अपने सहपाठियों को सुनाओ।

2. कहा जाता है कि विविधता में एकता भारतवर्ष की एक प्रमुख विशेषता है। तुम्हें हमारे देश में कैसी-कैसी विविधताएँ नजर आती हैं और उन विविधताओं के बीच एकता के तत्व क्या-क्या हो सकते हैं ? मंडली में बैठकर चर्चा करो और एक प्रतिवेदन बनाओ।

Copyright SCERT, Assam not to be republished

3. भारत की विभिन्न भाषाओं में रचित उत्कृष्ट साहित्य को विशिष्ट पुरस्कार या सम्मान से स्वीकृति दी जाती है। ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार आदि इस प्रकार के पुरस्कारों के उदाहरण हैं। नीचे दिए गए प्रारूप के अनुसार एक तालिका बनाओ :

भाषा	**साहित्यकार**	**पुरस्कार/सम्मान**
असमीया	डॉ. वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य	ज्ञानपीठ पुरस्कार
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

अपनी तालिका में सन्निविष्ट ग्रंथकारों के जितने संभव ग्रंथ हो लाकर पढ़ो। अगर मूल भाषा के ग्रंथ पढ़ना संभव न हो, पर अनुवाद उपलब्ध हो तो उसे ही पढ़ो।

4. तुम्हारी कक्षा में अगर भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी सहपाठी हैं तो उनकी सहायता से और नहीं तो अपने पास-पड़ोस में रहने वाले लोगों की सहायता से हिंदी में प्रचलित सामान्य व्यवहार के शब्दों के, जैसे- फलों के नाम, फूलों के नाम, साग-सब्जियों के नाम आदि की एक बहुभाषिक शब्दसूची प्रस्तुत करो।

5. भारत में अनेक समाचार पत्र और पत्रिकाएँ प्रकाशित होते हैं। विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित होनेवाले समाचार पत्र और पत्रिकाएँ खोजो और उनसे संबंधित तथ्यों की जानकारी निम्नलिखित प्रारूप में लिखो। तुम्हारी सहायता के लिए एक उदाहरण दिया गया।

	नाम	आवधिकता	संपादक का नाम	स्थान
1.	पूर्वांचल प्रहरी	दैनिक	श्री जी.एल.अग्रवाला	गुवाहाटी

Copyright - SCERT, Assam
not be republished

6. भारत में कई प्रकार की लिपियाँ प्रचलित हैं। नीचे कुछ भाषाओं की लिपियों की एक तुलनामूलक तालिका दी गई है। इसे ध्यान से देखो –

हिंदी	=	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
बांग्ला	=	অ	আ	ই	ঈ	উ	ঊ	ঋ	এ	ঐ	ও	ঔ
ओड़िया	=	ଅ	ଆ	ଇ	ଈ	ଉ	ଊ	ଋ	ଏ	ଐ	ଓ	ଔ
गुजराती	=	અ	આ	ઇ	ઈ	ઉ	ઊ	ઋ	એ	ઐ	ઓ	ઔ
पंजाबी	=	ਅ	ਆ	ਇ	ਈ	ਉ	ਊ	ਰਿ	ਏ	ਐ	ਓ	ਔ
तमिल	=	அ	ஆ	இ	ஈ	உ	ஊ	ரி	ஏ	ஐ	ஓ	ஔ
तेलुगु	=	అ	ఆ	ఇ	ఈ	ఉ	ఊ	ఋ	ఏ	ఐ	ఓ	ఔ
कन्नड़	=	ಅ	ಆ	ಇ	ಈ	ಉ	ಊ	ಋ	ಏ	ಐ	ಓ	ಔ
मलयालम	=	അ	ആ	ഇ	ഈ	ഉ	ഊ	ഋ	ഏ	ഐ	ഓ	ഔ

ऊपर की तालिका में केवल स्वरवर्णों के लिपि-चिह्न ही दिखाए गए हैं। व्यंजनों के चिह्नों की तालिका भी प्राप्त करो और उन लिपियों में अपना नाम और पता लिखने की कोशिश करो।

7. मातृभाषा अथवा गृहभाषा के माध्यम से होने वाला शिक्षण कार्य अधिक प्रभावी माना जाता है। इसके कारण क्या-क्या हो सकते हैं? मंडली में बैठकर चर्चा करो। क्यों कुछ बच्चों को मातृभाषा अथवा गृहभाषा के अलावा अन्य भाषा के माध्यम से भी शिक्षा लेनी पड़ती है? इसके कारण भी सोचो और पारस्परिक विचार-विमर्श करो। तुम्हारे इलाके में अगर ऐसे बच्चे हैं जिनकी शिक्षण माध्यम भाषा अपनी मातृभाषा अथवा गृहभाषा नहीं है तो निम्नलिखित तालिका में उनके तथ्य भरो –

विद्यार्थी का नाम	मातृभाषा/गृहभाषा	शिक्षण माध्यम भाषा	माध्यम भाषा भिन्न होने का कारण
1.			
2.			
3.			

Copyright SCERT Assam not to be republished

8. तुम्हें कौन-कौन-सी हिंदी फिल्में तथा धारावाहिक पसंद हैं ? उनका नाम, प्रसारण समय, निर्माता, निदेशक, अभिनेता-अभिनेत्री तथा विषय-वस्तु का संक्षिप्त वर्णन लिखकर उनकी एक तालिका बनाओ।

9. विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित अपनी पसंद के हिंदी विज्ञापनों को काटकर उन्हें स्क्रेप बुक में चिपकाकर एक अलबम बनाओ।

10. अपने विद्यालय के पुस्तकालय में संगृहीत विभिन्न भाषाओं के अनूदित पुस्तकें ढूँढ़ो और उन्हें पढ़कर अपना ज्ञान बढ़ाओ।

भाषा-अध्ययन :

1. तुमलोग वाक्य के तीन प्रकार- सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्य के बारे में जान चुके हो। अब एक प्रकार के वाक्य को दूसरे प्रकार में कैसे परिवर्तित किया जा सकता है उसके उदाहरण देखो और समझो -

(क) सूर्योदय होने पर पक्षी बोलने लगे। (सरल वाक्य)

सूर्योदय हुआ और पक्षी बोलने लगे। (संयुक्त वाक्य)

(ख) स्वावलंबी व्यक्ति सदा सुखी रहते हैं। (सरल वाक्य)

जो व्यक्ति स्वावलंबी होते हैं, वे सदा सुखी रहते हैं। (मिश्र वाक्य)

(ग) नीरजा ने कहानी सुनाई और नमिता रो पड़ी। (संयुक्त वाक्य)

नीरजा ने ऐसी कहानी सुनाई कि नमिता रो पड़ी। (मिश्र वाक्य)

2. नीचे लिखे वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित करके फिर से लिखो :

1. जो लोग परिश्रम करते हैं उन्हें अधिक समय तक निराश नहीं होना पड़ता। (सरल वाक्य में)
2. मैंने एक दुबला-पतला व्यक्ति देखा। (मिश्र वाक्य में)
3. वह खाना खाकर सो गया। (संयुक्त वाक्य में)
4. जिनकी आय कम है, उन्हें मितव्ययी होना चाहिए। (सरल वाक्य में)
5. मेरे घर पहुँचने पर पिताजी आए। (मिश्र वाक्य में)
6. बालिका गा और नाच रही है। (सरल वाक्य में)

Copyright-SCERT Assam not be republished

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

फुलवारी	= फूलों के बाग	संवाद	= बातचीत
तृप्त होना	= संतुष्ट होना	अन्तर्राष्ट्रीय	= दो या अधिक राष्ट्रों के बीच की
अनोखा	= आश्चर्य जनक	आगत शब्द	= किसी भाषा में अन्य भाषा से आने वाले शब्द
परिपुष्टि	= विकास के लिए आवश्यक तत्वों का योग	राजभाषा	= सरकारी कामकाज में प्रयुक्त भाषा
सामासिक	= समन्वित, मिले हुए	पारिभाषिक शब्दावली	=विभिन्न विषयों के शब्दों का संकलन जिसकी परिभाषा की गई है
समाहित	= निहित	गृहभाषा	= घर में परिवार के सदस्यों के बीच सामान्य बातचीत के लिए प्रयुक्त भाषा
ज्ञाता	= जानकार, विद्वान	संकटग्रस्त भाषा	= व्यवहार धीरे-धीरे घटने के कारण जिस भाषा के लुप्त हो जाने की आशंका हो
नियमबद्ध	= नियमों के अन्तर्गत रखना		
स्थिर	= जो परिवर्तित नहीं होता		
उद्भव	= उत्पत्ति होना, जन्म होना		
पारस्परिक	= एक दूसरे के		

Copyright- SCERT Assam not be republished